ISBN:978-93-5679-245-6

पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन



- डॉ० राजीव अग्रवाल
- दिनेश कुमार
- जया सिंह

पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

प्रोफ़ेसर-शिक्षा संकाय
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बांदा)

दिनेश कुमार

एम.ए. (भूगोल), एम.एड.

जया सिंह

बी.एड., एम.ए. (गृहविज्ञान)

पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल
दिनेश कुमार
जया सिंह

E-book संस्करण: 2026
मूल्य: ₹89

ISBN: 978-93-5679-245-6

प्रकाशक:
जया सिंह
ग्राम-डिंगवाही, पोस्ट-निवादा, जिला-बांदा
(उत्तर-प्रदेश) 210120
मो. - 8115986785
E-mail address - anjeljayasingh1234@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र के पर्यटन क्षेत्र, उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होते हैं। देश के पर्यटन क्षेत्र जितना सुंदर और आकर्षक होंगे, वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा होगा। यह सत्य है कि समय रहते अगर हमने अपनी विरासतों पर काम नहीं किया, तो हम पिछड़ जाएंगे। आर्थिक रूप से, सामाजिक रूप से और सांस्कृतिक रूप से। जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी भौगोलिक विरासत के प्रति जागरूक होगा और उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा कि इन विरासतों को पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाए, तथा भविष्य के लिए इन्हें सरक्षित किया जाए।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन** है। इस पुस्तक को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

प्रथम अध्याय में शिक्षाः विकास की प्रक्रिया, भूगोल से आशयः वर्गीकरण एवं महत्त्व, भूगोल शिक्षण की समस्याएँ समस्या का प्रादुर्भाव, समस्या कथन, अध्ययन का औचित्य, निहित शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन के चर परिकल्पनाएँ, परिसीमांकन, अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, अध्ययन से सम्बन्धित शोध अध्ययन, अध्ययन से सम्बन्धित समाचार लेख इत्यादि, समीक्षात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए हैं।

तृतीय अध्याय में पचनदा परिचय, पांचों नदियों का संक्षिप्त विवरण और करनखेड़ा मन्दिर का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया. शोध विधि, शोध अभिकल्प. लक्षित प्रतिवर्श, संस्थाओं का चयन, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन, फलांकन एवं सांख्यिकीय विधियों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में अध्ययन के निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन की सीमाएँ एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक —22/02/2026
स्थान — अतर्रा

डॉ० राजीव अग्रवाल
दिनेश कुमार
जया सिंह

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय अध्ययन परिचय

1.1	शिक्षाः विकास की प्रक्रिया
1.2	भूगोलः स्थानिक जागरूकता का आधार
1.3	भूगोल शिक्षण की समस्याएँ
1.4	समस्या का प्रादुर्भाव
1.5	समस्या कथन
1.6	अध्ययन का औचित्य
1.7	समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या
1.8	अध्ययन के उद्देश्य
1.9	अध्ययन के चर
1.10	परिकल्पना
1.11	अध्ययन का परिसीमांकन
1.12	अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षाः विकास की प्रक्रिया

शिक्षा केवल औपचारिक विद्यालयी व्यवस्था तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह एक सतत और बहुआयामी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन के हर चरण में उसकी सोच, व्यवहार और दृष्टिकोण को आकार देती है। यह न केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और समग्र विकास का भी आधार है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, नैतिकता और सामाजिक चेतना से सुसज्जित करती है, जिससे वह जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होता है और समाज में सकारात्मक योगदान दे सकता है।

- **ज्ञान और कौशल का विकास**

शिक्षा का सबसे प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति को विविध विषयों का ज्ञान प्रदान करना और उसे व्यावहारिक कौशलों से सुसज्जित करना है। यह ज्ञान केवल पुस्तकीय नहीं होता, बल्कि अनुभवजन्य और जीवनोपयोगी भी होता है। शिक्षा व्यक्ति को गणित, विज्ञान, भाषा, इतिहास, भूगोल जैसे विषयों में दक्ष बनाती है, साथ ही उसे विश्लेषणात्मक सोच, तार्किक तर्क, समस्या समाधान, निर्णय क्षमता और रचनात्मकता जैसे कौशलों का विकास करने में भी मदद करती है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में ये कौशल अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि व्यक्ति को बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवेश में स्वयं को अनुकूलित करना होता है। एक शिक्षित व्यक्ति न केवल अपने लिए अवसरों का निर्माण करता है, बल्कि वह दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनता है।

- **सामाजिक और नैतिक विकास**

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष व्यक्ति के सामाजिक और नैतिक विकास से जुड़ा होता है। यह व्यक्ति को समाज के मूल्यों, परंपराओं, नियमों और उत्तरदायित्वों से परिचित कराती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में सहिष्णुता, समानता, करुणा, सहयोग, और न्याय जैसे गुणों का विकास होता है। वह दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना सीखता है, सामाजिक विविधताओं को स्वीकार करता है, और सामूहिक हित के लिए कार्य करने की भावना विकसित करता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा व्यक्ति को नैतिक निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है, जिससे वह सही और गलत के बीच अन्तर कर सकता है और अपने

कार्यों की जिम्मेदारी ले सकता है। इस प्रकार, शिक्षा एक सभ्य, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- **व्यक्तिगत विकास**

शिक्षा व्यक्ति के आत्मबोध और आत्मविकास की यात्रा को दिशा देती है। यह उसे अपनी रुचियों, क्षमताओं, और आकांक्षाओं को पहचानने और उन्हें विकसित करने का अवसर देती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति आत्मविश्वास, आत्म–अनुशासन, और आत्म–प्रेरणा प्राप्त करता है, जिससे वह अपने जीवन के लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित कर सकता है। यह उसे जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है और उसे संतुलित, संतुष्टिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देती है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने जीवन को केवल भौतिक सफलता तक सीमित नहीं रखता, बल्कि वह आत्मिक और सामाजिक संतुलन की ओर भी अग्रसर होता है।

- **सामाजिक परिवर्तन**

शिक्षा समाज में जागरूकता, समानता और सशक्तिकरण का आधार बनती है। यह लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग करती है, उन्हें सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा देती है, और उन्हें सामूहिक रूप से बदलाव लाने के लिए संगठित करती है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लैंगिक समानता, पर्यावरणीय चेतना, और लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ावा मिलता है। एक शिक्षित समाज ही स्थायी विकास, शांति और समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकता है। शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को संभव बनाती है, जिससे वंचित वर्ग भी मुख्यधारा में शामिल होकर समाज के निर्माण में योगदान दे सकता है।

इस प्रकार, शिक्षा को केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि जीवन की एक सतत और परिवर्तनकारी यात्रा के रूप में देखा जाना चाहिए। यह व्यक्ति को आत्म–विकास की ओर ले जाती है और समाज को प्रगति की दिशा में प्रेरित करती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि सोचने, समझने, और बदलाव लाने की क्षमता विकसित करना है। इसलिए, शिक्षा को हर स्तर पर सुलभ, समावेशी, और प्रेरक बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि हर व्यक्ति और समाज अपने पूर्ण सामर्थ्य को प्राप्त कर सके।

1.2 भूगोलः स्थानिक जागरूकता का आधार

भूगोल (अंग्रेजी– Geography) शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– भू व गोल। यहाँ भू शब्द का तात्पर्य पृथ्वी और गोल शब्द का तात्पर्य उसके गोल आकार से है। यह एक विज्ञान है जिसके द्वारा पृथ्वी की सतह के स्वरुप और उसके प्राकृतिक विभागों (जैसे पहाड़, महाद्वीप, देश, नगर, नदी,

समुद्र, झील, जल–सन्धियाँ, वन आदि) का ज्ञान होता है। प्राकृतिक विज्ञानों के निष्कर्षों के बीच कार्य–कारण सम्बन्ध स्थापित करते हुए पृथ्वीतल की विभिन्नताओं का मानवीय दृष्टिकोण से अध्ययन ही भूगोल का सार तत्व है। पृथ्वी की सतह पर जो स्थान विशेष हैं उनकी समताओं तथा विषमताओं का कारण और उनका स्पष्टीकरण भूगोल का निजी क्षेत्र है।

1.2.1 अर्थ एवं परिभाषा

भूगोल की परिभाषा (Definition of Geography)

(1) ''भूगोल में पृथ्वी तल का अध्ययन मानवीय निवास के रूप में क्षेत्रीय भिन्नताओं के आधार पर किया जाता है।'' – मोंकहाउस

मोंकहाउस के अनुसार भूगोल वह विज्ञान है जो पृथ्वी का अध्ययन मानव के निवास स्थान के रूप में करता है। उसका यह निवास स्थान क्षेत्रीय विभिन्नताओं को संजोए हुए है। क्षेत्रीय विभिन्नताओं के अनुरूप ही मानव अपना जीवन निर्धारित करता है। वास्तव में मोंकहाउस की यह परिभाषा भूगोल का अत्यन्त संकुचित अर्थ प्रस्तुत करती है।

(2) ''भूगोल वह अनुशासन है जो पृथ्वी तल पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक परिवर्तनशील स्वरूपों का वर्णन और उनकी व्याख्या 'मानव के संसार' के रूप में करता है।''

1.2.2 वर्गीकरण

भूगोल को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है–

1. भौतिक भूगोल

इसमें पृथ्वी की भौतिक विशेषताओं, जैसे कि भू–आकृतियाँ (पहाड़, नदियाँ, मैदान), जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, और जलमण्डल का अध्ययन किया जाता है।

भौतिक भूगोल, भूगोल की एक शाखा है जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक वातावरण का अध्ययन किया जाता है। इसमें वायुमण्डल, जलमण्डल, स्थलमण्डल, और जीवमण्डल शामिल हैं, और इन प्रणालियों के बीच सम्बन्धों और उनमें होने वाले परिवर्तनों का भी अध्ययन किया जाता है।

2. मानव भूगोल

मानव भूगोल, भूगोल की एक शाखा है जो मनुष्यों और उनके पर्यावरण के बीच सम्बन्धों का अध्ययन करती है। मनुष्य कैसे स्थानों को प्रभावित करते हैं और कैसे स्थान मनुष्यों को प्रभावित करते हैं। इसमें जनसंख्या, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, और राजनीतिक प्रणालियों का अध्ययन करते हैं।

1.2.3 महत्व

भूगोल हमें पृथ्वी की गतिशील भौतिक प्रक्रियाओं, जैसे प्लेट टेक्टोनिक्स, अपरदन और जलवायु प्रणालियों को समझने में मदद करता है। यह ज्ञान प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणी, संसाधनों के प्रबंधन और पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव भूगोल का अध्ययन करके, हम मानव समाज और उसके पर्यावरण के बीच जटिल सम्बन्धों की गहरी समझ प्राप्त करते हैं। यह समझ सतत विकास, संसाधन प्रबन्धन और पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए आवश्यक है। भूगोल हमें स्थानिक विश्लेषण के लिए उपकरण और तकनीक प्रदान करता है, जिससे हम विभिन्न पैमानों पर पैटर्न, वितरण और सम्बन्धों की व्याख्या कर पाते हैं। यह स्थानिक परिप्रेक्ष्य शहरी नियोजन, परिवहन और आपातकालीन प्रतिक्रिया जैसे क्षेत्रों में अमूल्य है। भूगोल दुनिया भर की संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और परम्पराओं की विविधता का परीक्षण करके सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देता है। यह विभिन्न समाजों के प्रति सहिष्णुता, समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देता है, जिससे वैश्विक नागरिकता और अंतर–सांस्कृतिक संवाद में योगदान मिलता है। एक समग्र विषय के रूप में, भूगोल क्षेत्रों, राष्ट्रों और महाद्वीपों के अंतर्संबंधों की पड़ताल करता है। यह व्यापार, प्रवास, संचार और भू–राजनीतिक सम्बन्धों से उत्पन्न होने वाली अन्योन्याश्रितताओं पर प्रकाश डालता है, और वैश्वीकृत दुनिया की व्यापक समझ को बढ़ावा देता है।

1.3 भूगोल शिक्षण की समस्याएँ

- **प्राथमिक स्तर पर**

पाँचवीं कक्षा में भूगोल शिक्षा के महत्व के बावजूद, संभावित चुनौतियाँ और बाधाएँ छात्रों को इस विषय के प्रभावी शिक्षण में बाधा डाल सकती हैं। प्राथमिक विद्यालय की आयु के छात्रों को मानचित्र निर्माण, स्थानिक सम्बन्ध और भौगोलिक आँकड़ों की व्याख्या जैसी अमूर्त अवधारणाओं में कठिनाई हो सकती है। जटिल शब्दावली और जानकारी की विशाल मात्रा उन्हें अतिरंजित कर सकती है, जिसके परिणामस्वरूप अरुचि और सीमित समझ हो सकती है। इसके अलावा, पारम्परिक शिक्षण विधियाँ, जो रटने और निष्क्रिय सीखने पर अत्यधिक जोर देती हैं, छात्रों की जिज्ञासा और जागरूकता को जगाने में विफल रहती हैं। परिणामस्वरूप, छात्र भूगोल को एक नीरस विषय मान सकते हैं, जो सीखने की प्रक्रिया

में सक्रिय रूप से भाग लेने की प्रेरणा में बाधा डालता है। इसके अलावा, भूगोल के सीमित सम्पर्क के कारण, छात्रों को भूगोल को एक नीरस विषय के रूप में देखना पड़ सकता है, जो सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने की प्रेरणा में बाधा डालता है। वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग और व्यावहारिक अनुभव सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों में लागू करने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकते हैं। ये बाधाएँ नवीन रणनीतियों की आवश्यकता को उजागर करती हैं जो पाँचवीं कक्षा के छात्रों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करें और भूगोल के प्रति उनके उत्साह को बढ़ावा दें।

एक प्रमुख मुद्दा इस विषय में प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में अंतर्निहित रुचि की कमी है। पारम्परिक शिक्षण दृष्टिकोण, जो शिक्षक–आधारित व्याख्यान पर बहुत अधिक निर्भर करता है, अक्सर ध्यान केंद्रित करने और सीखने के अनुभव को आकर्षक बनाने में विफल रहता है। परिणामस्वरूप, छात्रों को भूगोल के लिए वास्तविक जिज्ञासा और उत्साह विकसित करने में संघर्ष करना पड़ सकता है। इसके अलावा, सैद्धांतिक ज्ञान और वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों के बीच का अन्तर एक महत्वपूर्ण बाधा उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए, छात्र अपने हाथों में विभिन्न प्रकार की चट्टानों के बारे में सीख सकते हैं, लेकिन उन्हें शायद ही कभी उनका सामना करने का अवसर मिलता है। आस–पास के वातावरण में उनका सामना करने का अवसर शायद ही कभी मिलता है। परिणामस्वरूप, उन्हें भूवैज्ञानिक अवधारणाओं के व्यावहारिक महत्व को समझने में कठिनाई हो सकती है और वे यह समझने में विफल हो सकते हैं कि इन तकनीकों का विभिन्न उद्योगों या दैनिक जीवन में कैसे उपयोग किया जाता है। अनुभवात्मक अधिगम और व्यावहारिक अनुप्रयोग का अभाव कक्षा 5 के छात्रों की भूगोल के क्षेत्र में समग्र समझ और सार्थक संलग्नता को बाधित करता है।

- **माध्यमिक एवं स्नातक स्तर पर**

माध्यमिक एवं स्नातक स्तर पर भूगोल शिक्षण की समस्याएँ निम्नलिखित हैं।

- **भूगोल कक्ष की समस्या**

लगभग सभी विद्यालयों में भूगोल कक्ष की पृथक व्यवस्था नहीं है जिससे शिक्षण–सामग्री का यथोचित प्रयोग नहीं हो पाता है। अतः छात्र पाठ को कंठस्थ करने में कठिनाई महसूस करते हैं।

- **प्रायोगिक कक्ष की समस्या**

भूगोल को विज्ञान का एक अंग माना गया है जिसके अध्यापन में न केवल सैद्धान्तिक तथ्य है, वरन् प्रायोगिक कार्य भी सम्मिलित है। इसके लिए सुसज्जित प्रयोगशाला अति आवश्यक है। कक्षा 12वीं के भूगोल पाठ्यक्रम में 100 में से 30 अंक प्रायोगिक कार्य के लिए निर्धारित है। अतः भूगोल के

शिक्षण–सामग्री के लिए प्रायोगिक कक्ष आवश्यक है, जिसमें मेज, टूल, ट्रेसिंग टेबल, सभी उपकरणों से युक्त अलमारी तथा अन्य फर्नीचर सुव्यवस्थित हो। भूगोल शिक्षण सामग्री की समस्या भूगोल शिक्षण में शिक्षण सामग्री एवं उपादानों का अत्यधिक महत्व है। शिक्षण सामग्री के अन्तर्गत मानचित्र, चार्ट, मॉडल, जलवायु एवं मौसम के उपकरण, कम्प्यूटर आदि की आवश्यकता होती है। भूगोल शिक्षण को रोचक, सरल तथा बोधगम्य बनाने में शिक्षक को इन दृश्य श्रव्य साधनों की आवश्यकता पड़ती है। अगर इन साधनों का प्रयोग नहीं किया जाता है, तो छात्र पाठ को आत्मसात करने में कठिनाई महसूस करते हैं।

- **पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला की समस्या**

भूगोल शिक्षण के लिए सुव्यवस्थित पुस्तकालय जिसमें पाठ्यपुस्तक, संदर्भ पुस्तक, पत्र–पत्रिकाएँ, कई प्रकार के एटलस, जनसंख्या प्रतिवेदन, सांख्यिकी प्रतिवेदन आदि रहते हैं, की परम् आवश्यकता है। भूगोल शिक्षण को सफल बनाने के लिए जिन उपादानों की आवश्यकता होती है वे सभी प्रयोगशाला में सुरक्षित रहते हैं। प्राचीनकाल के पत्थर, खनिज, फोटोग्राफ, मानचित्र आदि प्रयोगशाला में सुरक्षित रहते हैं। ये छात्रों का ज्ञानवर्धन करते हैं। बिहार के ग्रामीण व नगरीय 12वीं के विद्यालयों में अलग पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला का सर्वथा अभाव है। अगर पुस्तकालय है तो अलग से नहीं और पुस्तकें बिखरी हुई हैं। अच्छी पुस्तकों का संग्रह छात्रों की जिज्ञासा को शान्त करता है।

- **शैक्षणिक परिभ्रमण की समस्या**

12वीं के स्तर पर सरकार द्वारा शैक्षणिक भ्रमण के लिए राशि की कोई व्यवस्था नहीं है, जिस कारण शैक्षणिक परिभ्रमण नहीं हो पाता है। ज्ञातव्य हो कि भौगोलिक ज्ञान निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण पर आधारित होता है। अधिकांशतः इन विद्यालयों, महाविद्यालयों में भूगोल शिक्षण का अभाव, कुछ ही विद्यालयों में भूगोल शिक्षक नियुक्त हैं, जिस कारण इसका शिक्षण गिने–चुने विद्यालयों में हो पाता हैं। शिक्षक के अभाव में छात्र 12वीं में भूगोल विषय का चयन नहीं कर पाते हैं जिसके कारण छात्र स्नातक में भूगोल विषय नहीं ले पाते हैं।

- **संकाय की समस्या**

दूसरे राज्यों में भूगोल विज्ञान संकाय का अंग है, जबकि हमारे यहाँ कला संकाय में है। जिस कारण इसकी महत्ता को कमतर आँका जाता है।

- **कुशल एवं योग्य शिक्षकों, प्रोफेसरों के स्थान पर तदर्थ शिक्षकों का नियोजन–** सरकार की ठोस नीति के अभाव एवं उदासीनता के कारण विद्यालयों, महाविद्यालयों में कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों, प्रोफेसरों की नियुक्ति नहीं हो पा रही है। नियुक्ति प्रक्रिया भी त्रुटिपूर्ण है। नियमित शिक्षकों की

नियुक्ति न कर तदर्थ रूप में नियोजित शिक्षकों की बहाली की जाती है। उन्हें सम्मानजनक वेतन नहीं दिया जा रहा है। परिणामस्वरूप शिक्षकों की ऊर्जा शैक्षिक गतिविधियों में पूर्ण रूप से नहीं लग रही है।

1.4 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है। वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

किसी भी राष्ट्र का भूगोल उसके धन, संपदा और वैभव की नीव होता है। भौगोलिक दृष्टि से राष्ट्र में जितने संसाधन होंगे, वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जाएगा। यूं तो एक देश में बहुत से पर्यटन स्थान होते हैं, लेकिन प्राकृतिक रूप से समृद्ध स्थानों के प्रति समाज में कितनी जागरूकता है, यह उसे हमेशा सजीव बनाए रखते हैं। यही वजह है कि ऐसे स्थानों के संरक्षण का पूरा–पूरा प्रयास किया जाता है। भारत में भी ऐसे कई स्थान हैं जिनके बारे में बहुत ही कम साहित्य उपलब्ध है, पचनदा क्षेत्र उसी में से एक है। इस क्षेत्र में काफी कम ही पर्यटन क्षेत्र विकसित हो पाया है और इस क्षेत्र के प्रति आसपास के लोगों जिनमें जालौन, औरैया और इटावा के लोग ही शामिल हैं। इसके अलावा मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के ही अन्य जिलों में व्यापक प्रचार प्रसार नहीं है।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है। इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा।

1.5 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है –

"पचनदा के प्रति महाविद्यालायीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन"।

1.6 अध्ययन का औचित्य

शोधछात्र को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिए। शोध वस्तुतः ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है। शोध में गहन निरीक्षण

का प्रत्यय होता है। इसमें किसी सीमित क्षेत्र की समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है। उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सोद्देश्य सुनियोजित होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में पचनदा के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। हमारी विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती हैं और बतलातीं हैं। साथ ही इस रमणीय स्थान को देखने के लिए दूर दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं। वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ियों को पर्यटन स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है। दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्हें, दुर्गम स्थलों, गुफाओं, प्राकृतिक स्थानों और नदियों को देखने की जिज्ञासा रहती है। साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, और समुदायों के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है। वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं। उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने और परखने के साथ साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है। किन्तु, आज हमारे पर्यटन क्षेत्रों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका सही तरह से विकास नहीं हो पा रहा है। लोगों को ऐसे क्षेत्रों की जानकारी नहीं है, और इसलिए इस ओर लोगों का रुझान नहीं बन रहा है। अगर लोग ऐसे क्षेत्रों के प्रति जागरूक नहीं होंगे, तो इनको संरक्षण दे पाना मुश्किल हो जाएगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1.7 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.7.1 पचनदा – पचनदा, जिसे पंचनदा भी कहा जाता है, उत्तर प्रदेश के इटावा, औरैया और जालौन जिले की सीमा पर स्थित एक अद्वितीय स्थान है जहाँ पांच नदियाँ मिलती हैं– यमुना, चंबल, क्वारी, सिंध और पहूज। यह दुनिया में पांच नदियों के संगम का एकमात्र ज्ञात स्थान है।

1.7.2 महाविद्यालयीन विद्यार्थी – महाविद्यालयीन विद्यार्थी से आशय उन पढ़ने वाले विद्यार्थियों से है, जो किसी भी केंद्रीय अथवा प्रदेश विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले विभिन्न महाविद्यालयों में स्नातक, परास्नातक संकाय में अध्ययनरत हैं।

कार्यात्मक परिभाषा– प्रस्तुत लघुशोध में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य जालौन जिले में अवस्थित बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी से सम्बठ विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत संस्थागत विद्यार्थियों से है।

1.7.3 जागरूकता

विकिपीडिया के अनुसार– जागरूकता किसी चीज के प्रति सचेत होने की अवस्था है। अधिक विशेष रूप से, यह प्रत्यक्ष रूप से जानने, महसूस करने और घटनाओं का संज्ञान लेने की क्षमता है।

कार्यात्मक परिभाषा– प्रस्तुत लघुशोध में जागरूकता से तात्पर्य महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जालौन जिले में स्थित पचनदा के प्रति जानकारी से है।

1.7.4 अध्ययन – किसी विषय को सीखने और समझने के लिए दिमाग लगाना (विशेषकर पढ़कर) अध्ययन कहलाता है। हमारे उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में स्थित यह क्षेत्र कितना प्रसिद्ध है, कितने छात्र इस क्षेत्र से परिचित हैं। इस सम्बन्ध में मैंने अपने आसपास के महाविद्यालयों में जाकर लगभग 132 छात्रों से पचनदा क्षेत्र से संबंधित 23 प्रश्न गूगल फॉर्म के माध्यम से (अनलाइन मोड में) पूछकर एक रिपोर्ट तैयार की। सभी प्रश्न बहुविकल्पीय थे, जिसके 4 विकल्पों में से सिर्फ एक ही सही था।

1.8 अध्ययन के उद्देश्य

1. पचनदा का अध्ययन करना।

2. पचनदा के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।

3. विद्यार्थियों की पचनदा के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रदत्तों की सामान्य सम्भाव्यता का अध्ययन।

4. विद्यार्थियों की पचनदा के प्रति जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण करना।

5. पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंगानुसार अध्ययन करना।

6. अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

7. पचनदा के प्रति जागरुकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।

1.9 अध्ययन के चर– शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया गया है।

1.9.2 मापदंड चर– पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता

1.9.2 वर्गीकरण चर

- लिंग– छात्र–छात्राएँ

1.10 परिकल्पना– प्रस्तुत प्रस्तुत लघु शोध की निम्नलिखित परिकल्पना है।

- पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.11 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधछात्र शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरुप साधारणतः अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चहारदीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है—

- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के जालौन जनपद के अंतर्गत जालौन, उरई, एट, पिंडारी नगर तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन जालौन जनपद स्थित महाविद्यालयों तथा शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के संस्थागत विद्यार्थियों की जागरूकता के अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंगानुसार तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.12 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

भारत की धरोहरें अत्यंत समृद्ध है एवं हमारी कला—संस्कृति की आधारशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ—साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है। सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफी नहीं है। देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है। वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है। किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी पर्यटन विरासतों के प्रति जागरूक होगे अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध कार्य किया जा रहा है।

छात्रों में पचनदा क्षेत्र में अध्ययन के लिए इस तरह की सामग्री प्रस्तुत की जाए कि वे इस क्षेत्र में अध्ययन करें, वहाँ जाएं, घूमें, वहाँ के पर्यावरण, भौगोलिक परिस्थितियों, जीव जंतुओं और इतिहास का अध्ययन करें। इस रिपोर्ट के आधार पर हम केंद्र और राज्य सरकार से इस क्षेत्र को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने और देश विदेश से आने वाले विभिन्न सैलानियों को इस क्षेत्र में आकर्षित करने का प्रयत्न करें।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध समस्या

2.3 अध्ययन से संबंधित समाचार–लेख इत्यादि

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं– ज्ञान को एकत्र करना, एक–दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो यह सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कथन है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रति–लेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित–अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों आदि से हैय जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरा पूर्व मेंजिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोध ग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार– "मान्यता प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।"

"A summary of the writings of recognized authorities and of previous research provides evidence that the researcher is familiar with what is already known and what is still unknown and untested."

–John W. Best.

डॉ. नितिन गुप्ता, डॉ. राकेश कुमार दुबे, डॉ. नफीस (2022) ने Assessment Of Quality of The Chambal River Using Combination with That of Kota District पर शोध कार्य किया और पाया कि–


International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)

Assessment of Quality of the Chambal River Using Combination with That of Kota District

- चम्बल नदी की जल–गुणवत्ता कोटा नदी की तुलना में अधिक उत्तम पाई गई, क्योंकि चम्बल नदी में शहरी अपशिष्ट एवं औद्योगिक प्रदूषण का स्तर अपेक्षाकृत कम है जबकि कोटा नदी पर शहरी नालों तथा औद्योगिक अपशिष्टों का सीधा प्रभाव अधिक दिखाई देता है।
- कोटा नदी के भौतिक–रासायनिक मापदण्डों में अधिक विचलन पाया गया, जिसके कारण जलीय जीव–जंतुओं, पोषक तत्व संतुलन तथा पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव की संभावना चम्बल नदी की तुलना में अधिक देखी गई।
- इन दोनों नदियों के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि चम्बल नदी एक बेहतर 'संदर्भ मॉडल' के रूप में उपयोग की जा सकती है, जिसके आधार पर कोटा नदी की पुनर्स्थापना एवं संरक्षण हेतु अधिक प्रभावी नीतियाँ एवं नियोजन विकसित किये जा सकते हैं।

डॉ. श्याम गोविंद सिंह (2022) ने "Biodiversity of Mediclinal Plants at River Bank Yamuna Agra Uttar Pradesh" पर शोध कार्य किया और पाया कि–


International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)

Biodiversity of Medicinal Plants at River Bank of Yamuna, Agra, Uttar Pradesh

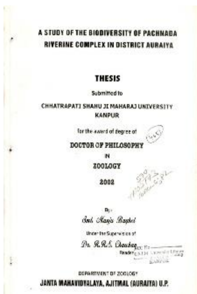
- आगरा के आसपास यमुना के किनारे कई पेड़ पौधे ऐसे पाए गए जिनका कई रोगों के इलाज में उपयोग किया जा सकता है।
- स्थानीय लोग आयुर्वेदिक औषधि के रूप में इसका उपयोग करते हैं।
- यमुना नदी तट (आगरा क्षेत्र) में औषधीय पौधों की विविधता काफी समृद्ध पाई गई। अध्ययन में अनेक प्रजातियाँ जैसे– तुलसी (Ocimum sanctum), अश्वगंधा (Withania somnifera), गिलोय (Tinospora cordifolia) और नीम (Azadirachta indica) प्रमुख रूप से दर्ज की गईं।

The Guardian (2017) की रिपोर्ट "The Yamuna: India's most Polluted River" पर शोध कार्य किया और पाया कि–



- यमुना नदी भारत की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक बन चुकी है। दिल्ली क्षेत्र से गुजरते समय नदी का लगभग 70% हिस्सा सीवेज, औद्योगिक अपशिष्ट और रासायनिक कचरे से प्रभावित पाया गया।
- निष्कर्ष में बताया गया कि दिल्ली, फरीदाबाद और आगरा जैसे शहरी केंद्रों से निकलने वाला बिना शोधन का अपशिष्ट (Untreated sewage) और उद्योगों से निकलने वाला रासायनिक कचरा यमुना प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।
- रिपोर्ट ने यह भी उजागर किया कि "यमुना एक्शन प्लान" जैसी सरकारी परियोजनाओं पर अरबों रुपये खर्च होने के बावजूद प्रदूषण की स्थिति में कोई ठोस सुधार नहीं हुआ। जनसहभागिता की कमी और कमजोर नीति–क्रियान्वयन को भी प्रदूषण के स्थायी बने रहने का मुख्य कारण बताया गया।
- यमुना नदी के पानी की गुणवत्ता बदल गई है, इसकी सफाई बहुत जरूरी है।

मंजू बघेल (2002) ने "A Study of Biodiversity of Pachnada Riverine Complex in District Auraiya" पर शोध कार्य किया और पाया कि–


A STUDY OF THE BIODIVERSITY OF PACHNADA RIVERINE COMPLEX IN DISTRICT AURAIYA

THESIS

Submitted to

CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

for the award of degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN ZOOLOGY

2002

By:

Smt. Manju Baghel

Under the Supervision of

Dr. R.R.S. Chauhan

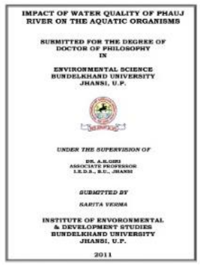
Reader

DEPARTMENT OF ZOOLOGY

JANTA MAHAVIDYALAYA, AJITMAL (AURAIYA) U.P.

- यहाँ आने वाली पाँचों नदियों का जल एकदम ताजा है, जिसमें क्लोराइड, सल्फेट, फास्फेट, सिलकेट, मैंगनीज, लोहा, कैड्मीयम, जिंक कि मात्र औसत या औसत के अससपासस है, जो पीने के लिए सर्वथा उपयुक्त है।
- अध्ययन में यह पाया गया कि औरैया जिले का पचनदा नदी तटीय क्षेत्र (जहाँ पाँच नदियाँ– यमुना, चंबल, सिंध, क्वांरी और पहुज मिलती हैं) जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ अनेक प्रकार की मछलियाँ, पक्षी, उभयचर, सरीसृप तथा औषधीय पौधों की प्रजातियाँ पाई गई हैं।
- निष्कर्ष में यह स्पष्ट हुआ कि अनियंत्रित मछली पकड़ना, रेत खनन, कृषि रसायनों का बहाव और पर्यटन गतिविधियाँ इस क्षेत्र की जैव विविधता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही हैं। कई जलीय जीवों की संख्या में कमी दर्ज की गई।

सरिता वर्मा (2011) की रिपोर्ट "पहूज नदी के जल की गुणवत्ता का जलीय जीवों पर प्रभाव" पर शोध कार्य किया और पाया कि–


IMPACT OF WATER QUALITY OF PHAUJ RIVER ON THE AQUATIC ORGANISMS

SUBMITTED FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY IN

ENVIRONMENTAL SCIENCE BUNDELKHAND UNIVERSITY JHANSI, U.P.

UNDER THE SUPERVISION OF

DR. A.K.GIRI
ASSOCIATE PROFESSOR
I.E.D.S., B.U., JHANSI

SUBMITTED BY

SARITA VERMA

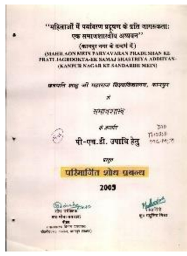
INSTITUTE OF ENVORONMENTAL & DEVELOPMENT STUDIES BUNDELKHAND UNIVERSITY JHANSI, U.P.

2011

- पहूज नदी में झांसी शहर से आने वाले सीवेज के कारण BOD 5-0 mg/L से ज्यादा है जो कि पीने और अन्य उपयोग के लायक नहीं है।

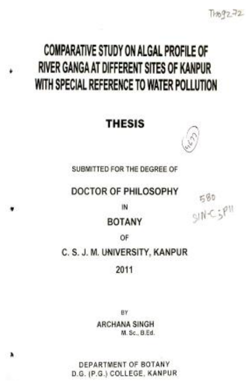
- शोध में यह निष्कर्ष निकला कि प्रदूषित जल के कारण नदी में पाई जाने वाली मछलियों, प्लवक (Plankton) और अन्य जलीय जीवों की प्रजातियाँ घट रही हैं। कुछ संवेदनशील प्रजातियाँ विलुप्तप्राय स्थिति में पहुँच गई हैं, जिससे पारिस्थितिक संतुलन प्रभावित हो रहा है।
- रिपोर्ट में सुझाव दिया गया कि पहूज नदी की जल गुणवत्ता को सुधारने के लिए अपशिष्ट शोधन संयंत्र (STP) की स्थापना, रासायनिक अपशिष्टों के सीधे प्रवाह पर रोक और स्थानीय समुदायों की जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है, ताकि नदी का जैविक जीवन पुनः संतुलित हो सके।
- पहूज नदी के जल की गुणवत्ता पिछले कुछ वर्षों में लगातार घट रही है। औद्योगिक अपशिष्ट, कृषि रसायनों और घरेलू सीवेज के कारण जल में घुलित ऑक्सीजन (DO) की मात्रा कम और रासायनिक ऑक्सीजन माँग (COD) तथा जैविक ऑक्सीजन माँग (BOD) के स्तर अधिक पाए गए।

मधुरिमा मिश्रा (2009) ने "महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–


पी-एच.डी. उपाधि हेतु
परिमार्जित शोध प्रबन्ध

- अशिक्षित महिलाओं की तुलना में शिक्षित महिलाएँ पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक थीं।
- अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश महिलाएँ पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को गंभीर मानती हैं, परंतु प्रदूषण के वैज्ञानिक कारणों और प्रभावों के प्रति उनकी जानकारी सीमित है। विशेषकर ग्रामीण और कम शिक्षित वर्ग की महिलाओं में यह अंतर अधिक स्पष्ट था।
- निष्कर्ष में यह पाया गया कि जिन महिलाओं को औपचारिक शिक्षा या मीडिया (टीवी, रेडियो, समाचारपत्र आदि) के माध्यम से जानकारी मिलती है, वे पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक सजग और सहभागी हैं।
- महिलाओं के बीच पर्यावरणीय साक्षरता बढ़ाने के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण शिविरों और स्वैच्छिक संगठनों के माध्यम से नियमित जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए, ताकि वे पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

अर्चना सिंह (2011) ने अपने शोध ग्रंथ "Comparative Study on Algal Profile of River Ganga at Different Sites of Kanpur with Special Reference to Water Pollution" में गंगा नदी के विभिन्न घाटों जैसे बिठूर जाजमऊ परमिट आदि की सेवा लिए जीवन की तुलना की है और उन्होंने सवालों की विविधता मौसमी वितरण और जल की जय और रासायनिक विशेषताओं के विश्लेषण द्वारा पाया कि–


COMPARATIVE STUDY ON ALGAL PROFILE OF RIVER GANGA AT DIFFERENT SITES OF KANPUR WITH SPECIAL REFERENCE TO WATER POLLUTION

THESIS

SUBMITTED FOR THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

BOTANY

OF

C. S. J. M. UNIVERSITY, KANPUR

2011

BY

ARCHANA SINGH

M. Sc., B.Ed.

DEPARTMENT OF BOTANY

D.G. (P.G.) COLLEGE, KANPUR

- जल प्रदूषण जैव संकेतक के रूप में पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिति को दर्शाते हैं।
- अध्ययन में पाया गया कि कानपुर के अलग–अलग घाटों और स्थलों पर गंगा नदी में पाए जाने वाले शैवाल (Algae) की प्रजातियाँ और उनकी घनत्व (Density) में स्पष्ट अंतर है। प्रदूषित क्षेत्रों में नीले–हरे शैवाल (Cyanophyceae) का प्रभुत्व देखा गया, जबकि अपेक्षाकृत स्वच्छ स्थलों पर हरे शैवाल (Chlorophyceae) और डायटम (Bacillariophyceae) की मात्रा अधिक थी।
- निष्कर्ष में यह पाया गया कि औद्योगिक अपशिष्ट और घरेलू सीवेज के प्रवाह ने गंगा नदी के जल की गुणवत्ता को प्रभावित किया है, जिससे कई संवेदनशील शैवाल प्रजातियाँ लुप्तप्राय हो गईं। उच्च BOD और कम DO स्तर वाले क्षेत्रों में केवल प्रदूषण–सहिष्णु प्रजातियाँ ही जीवित रहीं।
- शोध ने यह निष्कर्ष निकाला कि शैवाल की प्रजातियों में होने वाले परिवर्तनों को देखकर नदी के जल प्रदूषण स्तर का आकलन (bio & monitoring) किया जा सकता है। इस प्रकार शैवाल को जल गुणवत्ता का एक विश्वसनीय जैव–सूचक माना जा सकता है।

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित समाचार–लेख इत्यादि

पचनदा से सम्बन्धित कुछ प्रमुख समाचार–लेख निम्नलिखित हैं–

2.3.1 जनसत्ता (22 जून, 2017)

पाँच नदियों का संगम पचनदा पहचान का मोहताज, लेकिन अब बदल सकती है तकदीर और तस्वीर



पाँच नदियों का संगम उत्तर प्रदेश में इटावा जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर दूर बिठौली गांव में है। यह वह जगह है जो सबसे बेहतरीन पर्यटन स्थल बन सकती है। अभी तक उपेक्षित पचनदा की तकदीर लगता है पलटने वाली है। अगर केंद्रीय जल संसाधन मंत्री उमा भारती की बात को मानें तो पचनदा की तस्वीर बदलने की दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिलचस्पी ली है। प्रधानमंत्री

की सक्रियता का ही परिणाम दिखाई दिया कि उमा भारती केंद्रीय अफसरों के दल के साथ पचनदा का हवाई सर्वे भी कर चुकी हैं। वैसे पचनदा पर बांध निर्माण की सबसे पहली योजना 1986 में बनी थी लेकिन हकीकत में इस पर कोई प्रगति नहीं हो सकी। पचनदा को पर्यटन केंद्र के रूप मे स्थापित कराने की दिशा में इटावा के सांसद अशोक दोहरे ने दिलचस्पी दिखाई है।

उत्तर–प्रदेश समाजवादी पार्टी अनसूचित जाति जनजाति प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष विकास कुमार पचनदा को पर्यटक स्थल बनाने की मांग करते हुए कहते हैं कि इस इलाके का वैसे तो बहुत ही महत्व है लेकिन खूंखार दस्युओं के कारण अभी तक सरकारों की ओर से कोई ध्यान नहीं दिया गया है। इसी वजह से इस दुर्गम इलाके के लोग मूल विकास से अब तब वंचित रहे हैं।(देखें परिशिष्ट–3)

2.3.2 Webduniya

अब तक नहीं मिला 'पचनदा' को धार्मिक महत्त्व

उत्तर–प्रदेश में इटावा के बिठौली गांव में स्थित तातरपुर में यमुना, चम्बल, क्वाँरी, सिंध और पहूज नदियों का संगम होता है। इस संगम को पचनदा अथवा पचनद भी कहा जाता है। यहां के प्राचीन मन्दिरों में लगे पत्थर आज भी दुनिया के इस आश्चर्य और भारत की श्रेष्ठ धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत का बखान करते नजर आते हैं। कुदरत की अनुपम कृति को अपने आंचल में संजोए यह स्थान पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में अब तक नाकाम है।

स्थानीय लोग इसके पीछे सरकार की उदासीनता के अलावा दुर्दांत दस्यु गिरोह को भी जिम्मेदार मानते है, जिनके आतंक से कुख्यात चम्बल घाटी के 200 किमी के दायरे में फैले खतरनाक बीहड़ों में बसे पचनद को अपेक्षा के अनुरूप ख्याति नहीं मिल सकी। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यहां पचनदा मेले का आयोजन किया जाता है, जिसका प्रबंध ग्रामसभा कंजौसा की ओर से किया जाता है। प्राकृतिक सुन्दरता के मामले में पचनदा देश के गिने–चुने स्थानो में से एक माना जाता है। घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ियों से घिरे इस इलाके की अनुपम छटा का नजारा भरेह के ऐतिहासिक किले से देखा जा सकता है।

पर्यटन के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान दर्ज कराने में यह क्षेत्र भले ही कोसों दूर है, मगर श्रद्धालु धार्मिक समारोह को यहां पूरी संजीदगी से मनाते है। यहां धार्मिक लक्खी मेला में बड़ी संख्या में लोग हिस्सा लेते हैं। देवी भागवत और तुलसी साहित्य समेत अन्य धार्मिक ग्रंथों (**धार्मिक ग्रंथों में बना तीर्थराज, आज भी पहचान को मजबूर)** में उक्त क्षेत्र के व्यापक धार्मिक महत्व को दर्शाया गया है और इसको हिन्दुओं के महातीर्थराज की मान्यता दी गई है।

सैलानियों के लिए पचनदा रोमांच से भरपूर स्थान है। पांच नदियों के संगम एवं भरेह से पचनद तक विश्व प्रसिद्ध डॉल्फिन मछली का बहुतायत में मिलना सैलानियों के लिए कौतूहल का विषय है। पचनदा का मनोरम परिदृश्य वर्षा ऋतु में और भी मनोहारी हो जाता है, मगर पांच नदियों का यह अनूठा संगम संभवत– बहुचर्चित चम्बल घाटी में स्थित होने की वजह से उपेक्षित रह गया। चम्बल घाटी बरसों से डकैतों की शरणस्थली रही, जहां उत्तरप्रदेश तथा मध्यप्रदेश के दस्यु गिरोह खतरनाक खादरों में पनाह लेते थे।

पचनदा के आसपास के 20 किमी. के दायरे में डकैत शरण लेकर अपनी गतिविधियों को अंजाम देते थे, जिससे इस इलाके के सौंदर्यीकरण और विकास में बाधा आती रही है। देश में सदियों से विभिन्न नदियों की उपासना की जाती रही है और दो अथवा तीन नदियों के संगम स्थलों का विशेष महत्व रहा है, मगर यह आश्चर्यजनक बात है कि पांच नदियों के संगम 'पचनदा' को पर्याप्त धार्मिक महत्व नहीं मिला।(देखें परिशिष्ट–3)

2.3.3 News 24 (1-10-2024)

दुनिया का इकलौता ऐसा स्थान, जहाँ मिलती हैं पाँच नदियाँ

उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में स्थित पंचनदा, दुनिया का इकलौता ऐसा स्थान है जहां पांच नदियों का संगम होता है। चंबल, यमुना, क्वारी, सिंधु और पहुज नदियों का यह संगम एक खास धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व रखता है। पचनदा का महत्व केवल प्राकृतिक ही नहीं बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से भी है। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा पर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान से लाखों श्रद्धालु आते हैं।(देखें परिशिष्ट–3)

2.3.4 जागरण (17.11.2012)

पाँच नदियों के कारण विश्व विख्यात है पचनद

चकरनगर (इटावा) उप्र– क्षेत्र का पचनद स्थान पांच नदियों के संगम के कारण विश्व विख्यात है। इस स्थान पर यमुना, चंबल, क्वाँरी, सिंध, पहुज नदियों का संगम होता है। यहीं से यमुना कालपी की ओर पूर्व दिशा की ओर मुड़ जाती है। यहाँ का अद्भुत नजारा लोगों को अपनी ओर खींच लेता है। चंबल के बीहड़ इलाके में स्थित इस स्थान का विशेष धार्मिक महत्व है।

बताते हैं कि यहां पर सतयुग में ब्रह्मा जी के आदेश से नारद मुनि ने महर्षि बाल्मीकि को रामायण की रचना के लिए प्रेरित किया था और बाल्मीकि ने संपूर्ण रामायण की रचना की थी। किवंदती

यह भी है कि भगवान विष्णु कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर ब्रह्म मुहूर्त में पचनद कुंड में स्नान कर भोले बाबा की आराधना करते हैं। इसी कुंड में ज्ञान की देवी मां सरस्वती भी कार्तिक पूर्णिमा को ब्रह्मामुहूर्त में दर्शन देती हैं और उस काल में स्नान ध्यान करने वालों की इच्छापूर्ति करती हैं। इसलिए इसी दिन कार्तिक पूर्णिमा पर बड़ी संख्या में लोग यहां स्नान के लिए आते हैं और अपनी मनौती मांगते हैं। यहां पर मेला भी लगता है। भगवान भोलेनाथ का कालेश्वर मंदिर भी आसपास के जिलों में प्रसिद्ध है। यहां पर दूर दराज से लोग दर्शन करने आते हैं।(देखें परिशिष्ट–3)

2.3.5 पंजाब केसरी (23.04.2025)

धरती पर इकलौती जगह जहाँ होता है पाँच नदियों का मिलन

यह जगह और कहीं नहीं हमारे ही देश में है। बुन्देलखण्ड के जालौन में पाँच नदियों का संगम होता है और इसे 'पंचनद' के नाम से जाना जाता है। यहाँ जिन पाँच नदियों का संगम होता है, उनमें यमुना, चम्बल, सिंध, पहुज, क्वांरी नदियां शामिल हैं। उत्तर प्रदेश में जालौन और इटावा की सीमा पर स्थित यह स्थान प्रकृति का अनूठा उपहार और हिंदू धर्म से जुड़े लोगों के लिए आस्था का प्रमुख केंद्र है। वैसे तो साल भर में यहाँ सिर्फ एक बार मेला लगता है, लेकिन खास स्नानों के मौके पर यहाँ श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है।

तीन नदियों का संगम होने से उत्तर प्रदेश का प्रयागराज संगम कहलाया, ठीक वैसे ही पाँच नदियों के संगम के कारण पंचनद को महातीर्थराज के नाम से जाना जाता है।(देखें परिशिष्ट–3)

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता के द्वारा पूर्व में किये गए कतिपय शोधों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया जिसमें जनपद जालौन का सारस्वत योगदान, कोटा नदी के साथ संयोजन का उपयोग करके चंबल नदी की गुणवत्ता का आकलन, यमुना नदी तट पर औषधीय पौधों की जैव विविधता, आगरा, उत्तर प्रदेश, यमुनाः भारत की सबसे प्रदूषित नदी, औरैया जिले में पचनदा नदी की जैव विविधता का अध्ययन, पहूज नदी के जल की गुणवत्ता का जलीय जीवों पर प्रभाव, महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता, जल प्रदूषण के विशेष संदर्भ में कानपुर के विभिन्न स्थलों पर गंगा नदी के शैवाल प्रोफाइल, पर तुलनात्मक अध्ययन, विद्यार्थियों का सूचना क्रान्ति, पांच नदियों का संगम पचनदा पहचान का मोहताज, लेकिन अब बदल सकती है तकदीर और तस्वीर, धार्मिक ग्रंथों में बना तीर्थराज, आज भी पहचान को मजबूर, दुनिया का इकलौता ऐसा स्थान, जहां मिलती हैं पांच नदियाँ, पांच नदियों का संगम पचनदा पहचान का मोहताज, लेकिन अब बदल सकती है तकदीर और तस्वीर, परम्परागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति

और उन्होंने देवी के पैर पकड़ लिए। तब से उज्जैन और जगम्मनपुर दोनों जगह देवी की पूजा की जाती है। हर वर्ष नवरात्रि में यहाँ मेला लगता है।

दूसरी जनश्रुति के अनुसार राजा कर्ण ने अपने को खौलते हुए तेल में डाल दिया, जिससे देवी प्रसन्न हुई और उन्हे प्रतिवर्ष एक मन सोना देती थी, जिसे वे सहर्ष दान कर देते थे। जब राज्य विक्रमादित्य वहाँ पहुंचे और देवी से उज्जैन जाने की विनती की, तो देवी ने जाने से इनकार कर दिया। इस पर राजा को गुस्सा आ गया और उन्होंने मूर्ति के दो टुकड़े कर दिए। इस प्रकार यहाँ देवी के सिर्फ पैर ही बचे हैं, जिनकी पूजा होती है।



चित्र सं. 3.2– देवी के पैरों की पूजा

पचनदा में स्थित महाकालेश्वर मंदिर एक प्राचीन धार्मिक स्थल है, जो लगभग 800 ईसा पूर्व का बताया जाता है। यह मंदिर साधु–संतों के लिए विशेष आस्था का केंद्र है और यहाँ भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र की प्राप्ति के लिए महेश्वरी की पूजा की थी।

महाभारतकालीन इतिहास

पचनदा का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि पांडवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय यहाँ बिताया था, जिससे इस स्थान का ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व और बढ़ जाता है।

"A statistical sample is a miniature picture or cross section of the entire group or aggregate from which the sample is taken."

-Scientific and Social Survey and Research, P.V. Young

प्रतिचयन, प्रतिदर्श चुनने की विधि है जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव किया जाता है। प्रतिदर्श की इकाइयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि(universe) का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह प्रतिदर्श चुना गया है।

4.4.1 प्रतिदर्श चयन की विधियाँ

प्रतिदर्श का चयन किसी न किसी प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाता है। प्रतिचयन प्रक्रिया के लिये तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रत्येक अध्ययनकर्ता प्रतिचयन नहीं कर सकता है। वह प्रतिचयन तभी कर सकता है जब उसे प्रतिचयन पद्धतियों का आवश्यक ज्ञान हो या इस क्षेत्र में उसे प्रशिक्षण प्राप्त हो।

प्रतिदर्श चयन की विधियों को मुख्यतः दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है–

(1) यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ– यादृच्छिक प्रतिचयन विधियों में वे सारी विधियाँ आती हैं जिसमें किसी न किसी प्रकार का यादृच्छिकरण शामिल होता है। ऐसी विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है–.

- संयोगिक प्रतिचयन
- वर्गबद्ध प्रतिचयन
- गुच्छ प्रतिचयन
- द्विस्तर प्रतिचयन

(2) गैर यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ– यादृच्छिक विधि में प्रतिदर्श के सदस्यों का चुनाव उनकी उपलब्धता और शोधकर्ता की सुविधा पर निर्भर करता है अर्थात शोधकर्ता प्रतिदर्श में उन्हीं सदस्यों को रखता है

जिन्हें वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। इससे प्रतिदर्श में अधिक सदस्य लिए जा सकते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है–

- उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- अंश प्रतिचयन
- आकस्मिक प्रतिचयन
- सुविधानुसार प्रतिचयन
- स्वेच्छानुसार प्रतिचयन

4.4.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू होती है जो टहलते हुए अचानक मिल जायें या उन लोगों पर लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो। स्वयंसेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आँकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन–अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के मोबाईल में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

4.5 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया–

4.5.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के जालौन जनपद का चयन किया गया है। शोध छात्र जालौन जनपद का निवासी है एवं यहीं रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है, जिस कारण शोधकर्ता का इस नगर से भावनात्मक जुड़ाव भी है। अतः शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन में सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि को अंगीकृत कर जालौन जिले को चयनित किया गया।

4.6 शोध उपकरण

शोध उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में तथ्यों के संकलन के लिये प्रायोगिक विधि में किसी उपकरणध्यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ–साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है। लेकिन जब अध्ययन प्रयोगात्मक विधि के अतिरिक्त अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा किये जाते हैं तो तथ्यों के संकलन में मुख्यतः निम्न उपकरणों का उपयोग करते हैं –

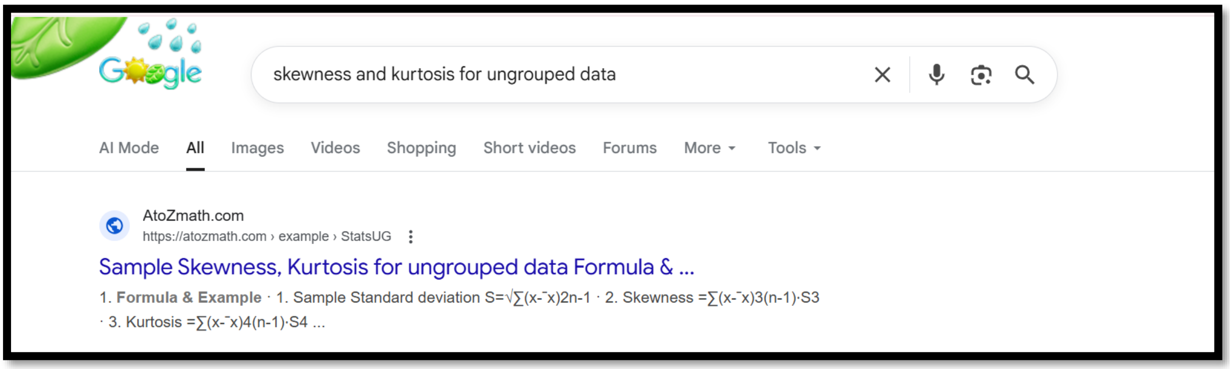
- प्रेक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची
- प्रश्नावली
- समाजमिति
- वैयक्तिक अध्ययन
- व्यक्तिवृत विधि
- वस्तुपरक मापनियाँ

    (i) निर्धारण मापनी

    (ii) पदांकन मापनी

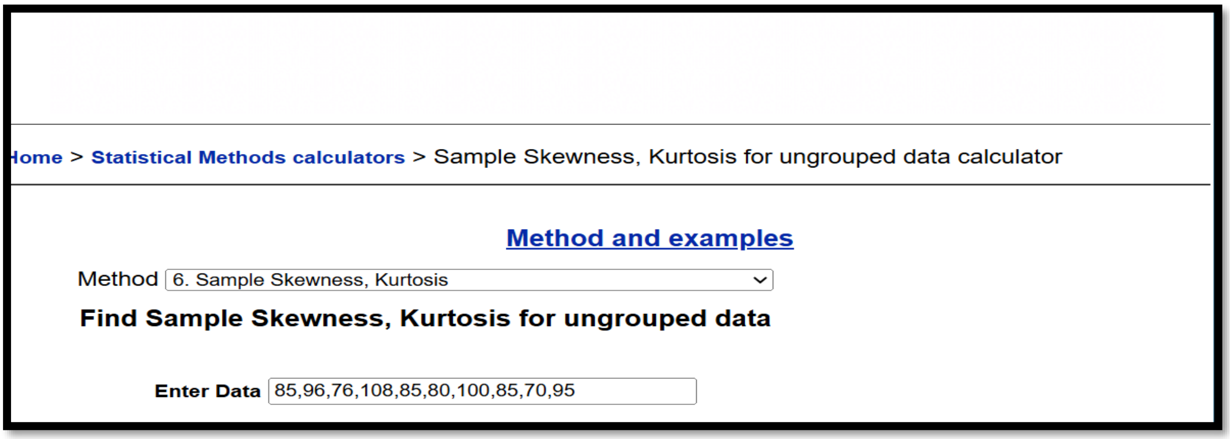
ऑनलाइन वैषम्यता और कुकुदता ज्ञात करने के चरण–

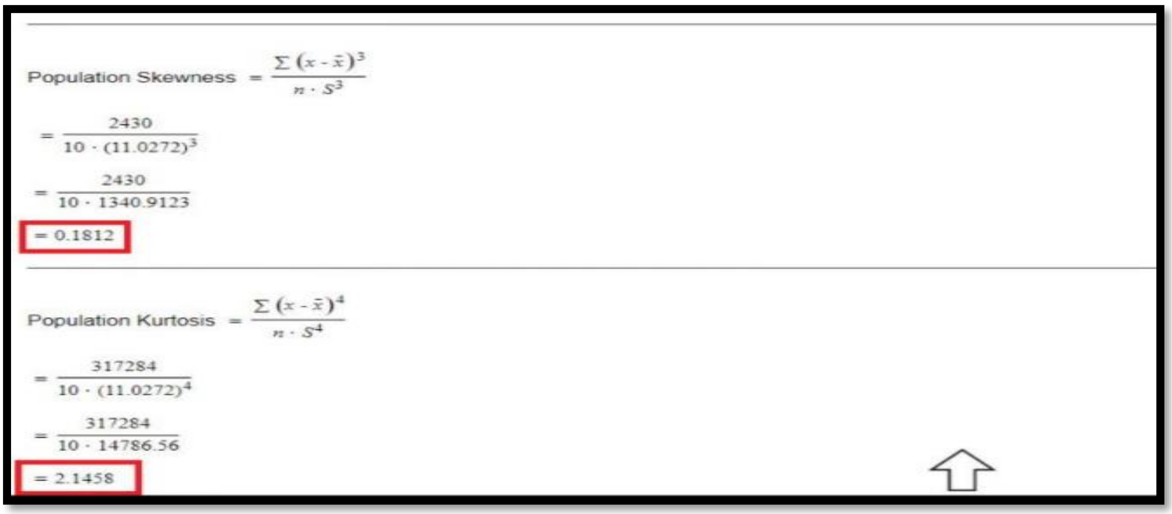
Step 1: सबसे पहले गूगल क्रोम ब्राउजर को खोलें।



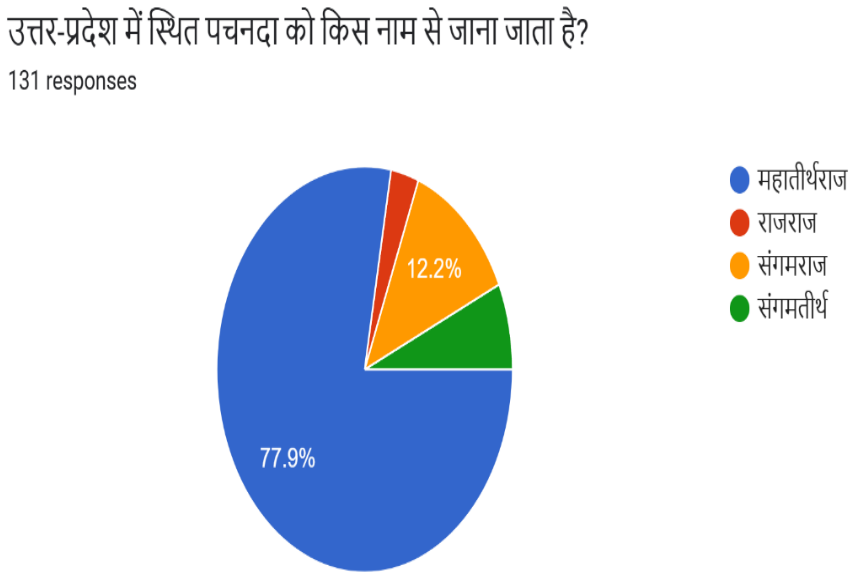
Step 2: Online Skewness and Kurtosis ungrouped data खोजें।

Step 3: पहले सर्च रिजल्ट (A to Z math) को खोलें।





पाई ग्राफ सं 5.2.3



तालिका सं. 5.2.3

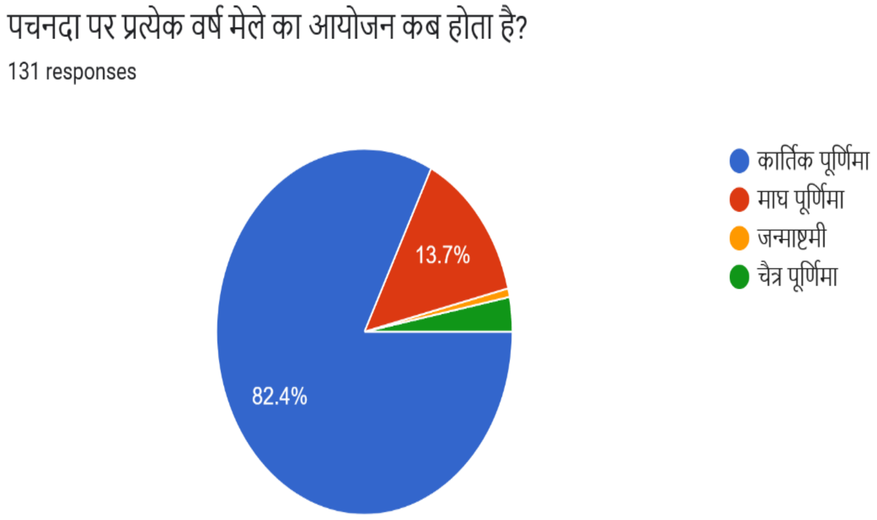
सही उत्तर			
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	44	75%
छात्राएँ	74	59	79%
कुल विद्यार्थी	132	103	77%

सही उत्तर– महातीर्थराज

विश्लेषण उपर्युक्त पाई ग्राफ 5.2.3 और तालिका संख्या 5.2.3 से स्पष्ट है कि "पचनदा को महातीर्थराज नाम से जाना जाता है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 75.9 पाया गया वहीं, छात्राओं का प्रतिशत 79.7 पाया गया, कुल 77.9% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया है।

विवेचना उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि "पचनदा को महातीर्थराज नाम से जाना जाता है" तथ्य से अधिकांश छात्र अवगत हैं।

पाई ग्राफ सं. 5.2.4



तालिका सं. 5.2.4

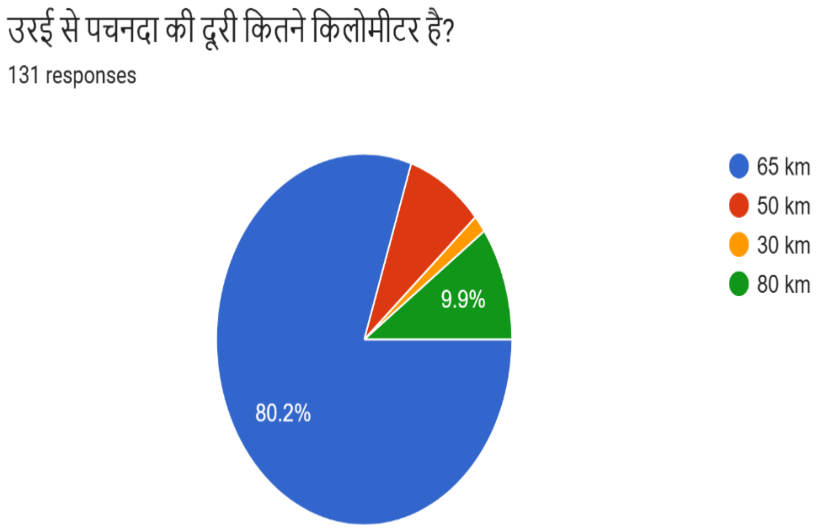
सही उत्तर			
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	46	79%
छात्राएँ	74	63	85%
कुल विद्यार्थी	132	109	82%

सही उत्तर– कार्तिक पूर्णिमा

विश्लेषण उपर्युक्त पाई ग्राफ 5.2.4 और तालिका संख्या 5.2.4 से स्पष्ट है कि "पचनदा पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 79.3 पाया गया वहीं, छात्राओं का प्रतिशत 85.1 पाया गया, कुल 82.4% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया है।

विवेचना उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि "पचनदा पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है" तथ्य से अधिकांश छात्र अवगत हैं।

पाई ग्राफ सं. 5.2.5



तालिका सं. 5.2.5

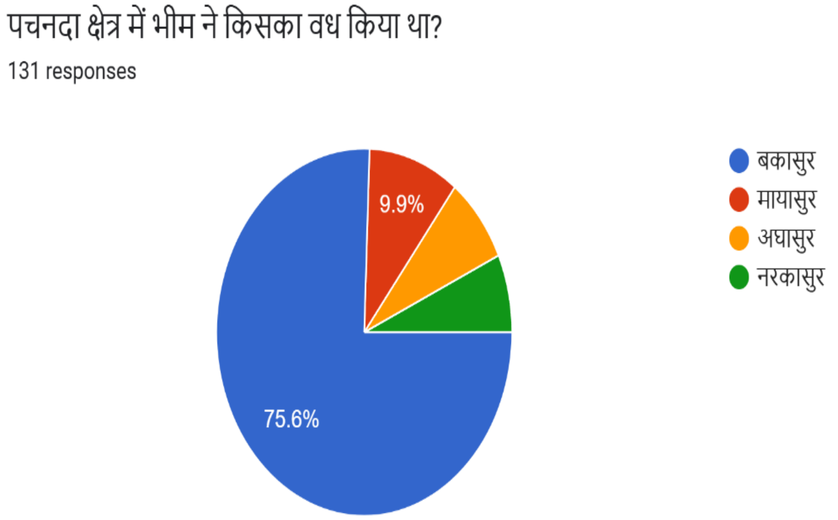
सही उत्तर			
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	44	75%
छात्राएँ	74	62	83%
कुल विद्यार्थी	132	106	80%

सही उत्तर– 65 किलोमीटर

विश्लेषण उपर्युक्त पाई ग्राफ 5.2.5 और तालिका संख्या 5.2.5 से स्पष्ट है कि "उरई से पचनदा 65 किलोमीटर की दूरी पर है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 75.9 पाया गया वहीं, छात्राओं का प्रतिशत 83.8 पाया गया, कुल 80.2% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया है।

विवेचना उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि "उरई से पचनदा 65 किलोमीटर की दूरी पर है" तथ्य से अधिकांश छात्र अवगत हैं।

पाई ग्राफ सं. 5.2.6



तालिका सं. 5.2.6

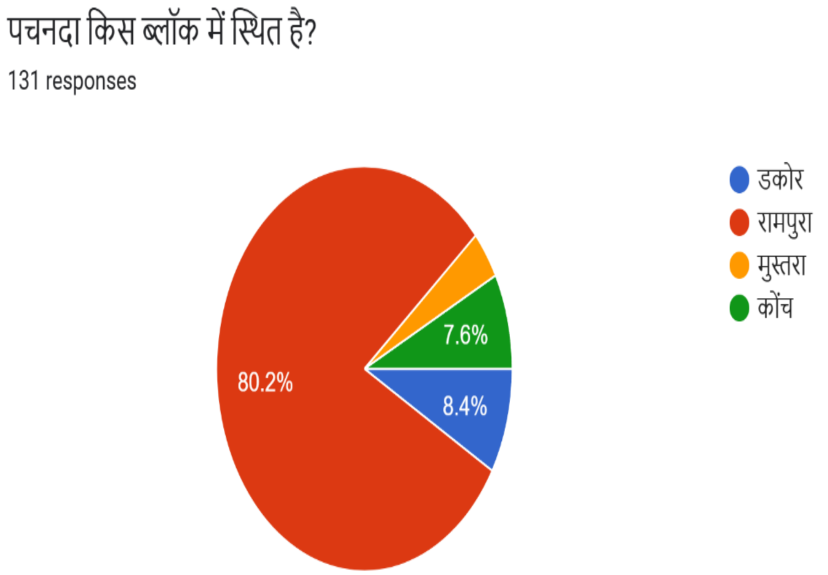
सही उत्तर			
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	43	74%
छात्राएँ	74	56	75%
कुल विद्यार्थी	132	99	75%

सही उत्तर– बकासुर

विश्लेषण उपर्युक्त पाई ग्राफ 5.2.6 और तालिका संख्या 5.2.6 से स्पष्ट है कि "भीम ने पचनदा में बकासुर का वध किया था" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 74.1 पाया गया वहीं, छात्राओं का प्रतिशत 75.7 पाया गया, कुल 75.6% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया है।

विवेचना उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि "भीम ने पचनदा में बकासुर का वध किया था" तथ्य से अधिकांश छात्र अवगत हैं।

पाई ग्राफ सं. 5.2.10



तालिका सं. 5.2.10

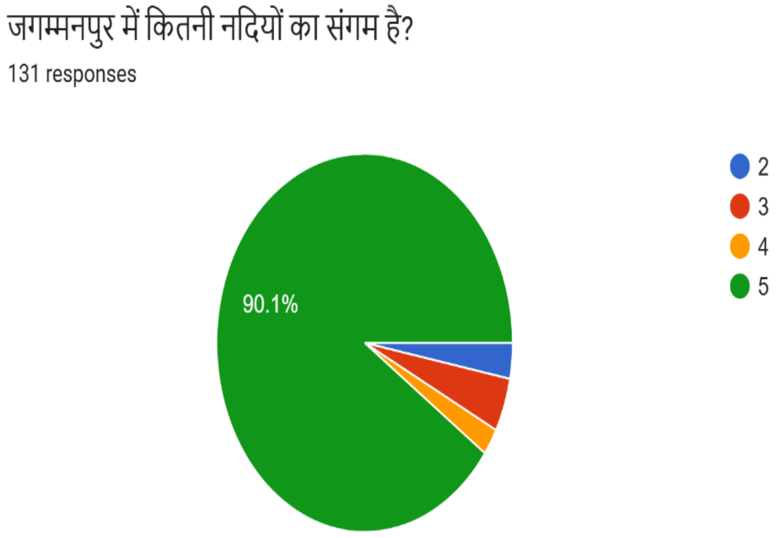
सही उत्तर			
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	49	84%
छात्राएँ	74	57	77%
कुल विद्यार्थी	132	106	80.2%

सही उत्तर– रामपुरा

विश्लेषण उपर्युक्त पाई ग्राफ 5.2.10 और तालिका संख्या 5.2.10 से स्पष्ट है कि "पचनदा जालौन के रामपुरा ब्लॉक में है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 84.5 पाया गया वहीं, छात्राओं का प्रतिशत 77.0 पाया गया, कुल 80.2% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया है।

विवेचना उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि "पचनदा जालौन के रामपुरा ब्लॉक में है" तथ्य से अधिकांश छात्र अवगत हैं।

पाई ग्राफ सं. 5.2.11



तालिका सं. 5.2.11

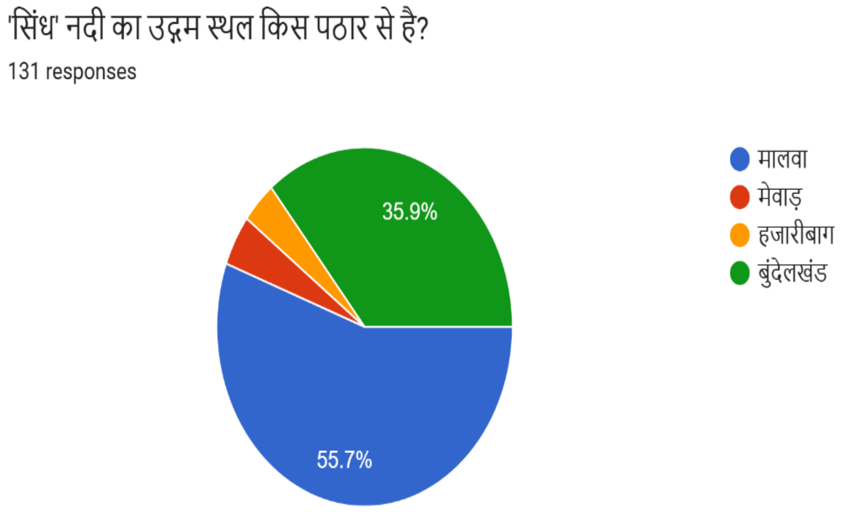
सही उत्तर			
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	55	94%
छात्राएँ	74	64	86%
कुल विद्यार्थी	132	119	90.1%

सही उत्तर– 5

विश्लेषण उपर्युक्त पाई ग्राफ 5.2.11 और तालिका संख्या 5.2.11 से स्पष्ट है कि "जगम्मनपुर में 5 नदियों का संगम है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 94.8 पाया गया वहीं, छात्राओं का प्रतिशत 86.5 पाया गया, कुल 90.1% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया है।

विवेचना उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि "जगम्मनपुर में 5 नदियों का संगम है" तथ्य से अधिकांश छात्र अवगत हैं।

पाई ग्राफ सं. 5.2.23



तालिका सं. 5.2.23

सही उत्तर			
लिंग	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	58	32	55%
छात्राएँ	74	42	56%
कुल विद्यार्थी	132	77	55%

सही उत्तर– मालवा

विश्लेषण उपर्युक्त पाई ग्राफ 5.2.23 और तालिका संख्या 5.2.23 से स्पष्ट है कि "सिन्ध नदी का उद्गम स्थल मालवा पठार से है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 55.2 पाया गया वहीं, छात्राओं का प्रतिशत 56.8 पाया गया, कुल 55.7% विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया है।

विवेचना उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि "सिन्ध नदी का उद्गम स्थल मालवा पठार से है" तथ्य से आधे से कम छात्र ही अवगत हैं। इस बारे में और ज्यादा जागरूकता की आवश्यकता है।

5.3 पचनदा के प्रति महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

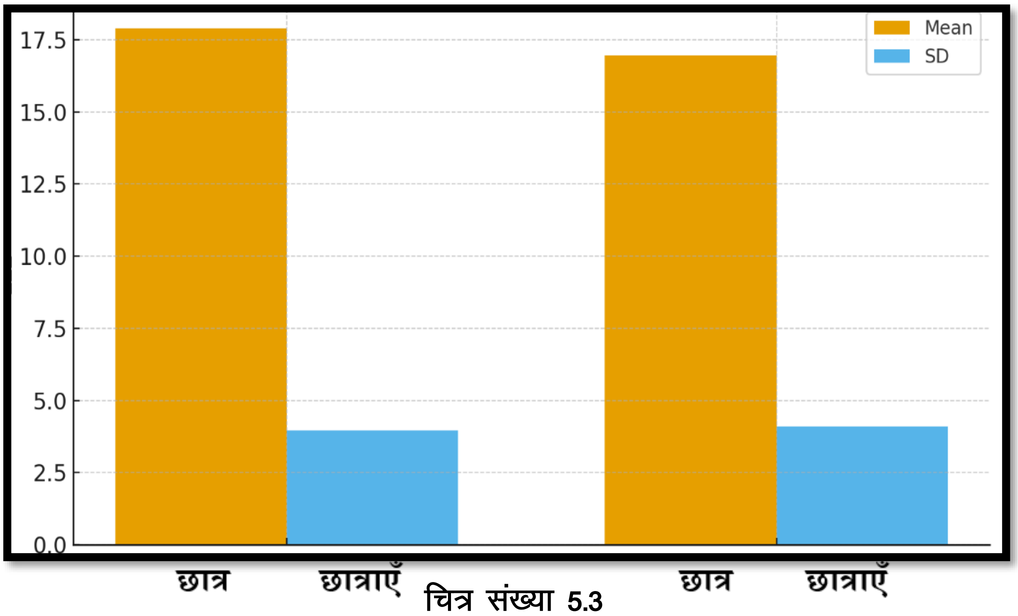
तालिका सं. 5.3

पचनदा के प्रति महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

सारणी: छात्र एवं छात्राओं के स्कोर का तुलनात्मक विश्लेषण

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात गणना मान (CR)	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	58	17.9	3.96	1.3178	1.962	0.05	सार्थक अंतर नहीं है।
छात्राएँ	74	16.97	4.11				

df= 130



चित्र संख्या 5.3

पचनदा के प्रति महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा–चित्र

विश्लेषण– तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 से स्पष्ट है कि महाविद्यालय के छात्रों का मध्यमान 17.9 तथा छात्राओं का मध्यमान 16.97 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.3178 है जो कि स्वतन्त्रांश 130 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.962 से कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "पचनदा के प्रति महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना– तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

षष्ठ निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

6.2 अध्ययन के सुझाव

6.3 अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में न पहुँचा जाए। अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया। एक उत्तम शोध प्रबन्ध की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्त पर आधारित हों, उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किंचित् मात्र भी प्रभाव न पड़े। इस अध्याय को निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है।

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन की सीमाएँ
- भावी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है। प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

उद्देश्य 1: पचनदा का अध्ययन करना

पचनदा से सम्बन्धित न्यादर्शों की वैषम्यता तथा कुकुदता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि इनका स्तर सामान्य नहीं है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षो को जनसंख्या पर लागू नहीं किया जा सकता और जो थोड़ा बहुत जागरुकता में अन्तर परिलक्षित हो रहा है, वह संयोगजन्य है।

उद्देश्य 2: पचनदा के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना

शोधकर्ता द्वारा पचनदा के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें 23 बहुविकल्पीय (4 विकल्प) प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 3: पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

- पचनदा के प्रति महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पचनदा के प्रति महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है।

उद्देश्य 4: पचनदा के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण करना

- निम्न प्रश्न/तथ्यों के सन्दर्भ में अधिकांश विद्यार्थी अवगत है–

➢ सिन्धु नदी पचनदा में शामिल नहीं है (प्रश्न 1)
➢ पचनदा जालौन जिले में स्थित है (प्रश्न 2)
➢ पचनदा को महातीर्थराज नाम से जाना जाता है (प्रश्न 3)
➢ पचनदा पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है (प्रश्न 4)
➢ उरई से पदनदा 65 किमी. की दूरी पर है (प्रश्न 5)
➢ भीम ने पचनदा में बकासुर का वध किया था (प्रश्न 6)
➢ बाबा साहब का मंदिर जगम्मनपुर में है (प्रश्न 7)
➢ पचनदा उत्तर–प्रदेश में है (प्रश्न 9)
➢ पचनदा जालौन के रामपुरा ब्लॉक में है (प्रश्न (10)
➢ जगम्मनपुर में 5 नदियों का संगम है (प्रश्न 11)
➢ पचनदा जगम्मनपुर में है (प्रश्न 12)
➢ जगम्मनपुर का किला उत्तर प्रदेश में है (प्रश्न 13)
➢ तुलसीदास जी की खड़ाऊँ जगम्मनपुर में है (प्रश्न 14)
➢ जानापाव पहाड़ी से चम्बल नदी का उद्गम हुआ है (प्रश्न 16)
➢ पचनदा में पहूज, चम्बल और यमुना नदियाँ शामिल हैं (प्रश्न 18)
➢ पचनदा पर बाबा साहब का मंदिर है (प्रश्न 19)
➢ पचनदा में पांडवों ने अज्ञातवास काटा था (प्रश्न 20)
➢ क्वांरी नदी का उद्गम स्थल भिंड जिले में है (प्ररन 22)

- निम्न प्रश्न/तथ्यों के सन्दर्भ में आधे से कुछ अधिक विद्यार्थी ही अवगत है–
  - ➢ बाबासाहब तुलसीदास के समकालीन थे (प्रश्न 8)
  - ➢ महाकालेश्वर की स्थापना 800B.C. में हुई थी (प्रश्न 15)
  - ➢ पचनदा की नदियाँ गंगा में मिलती हैं (प्रश्न 17)
  - ➢ पहुंच नदी का उद्गम स्थल बबीना में है (प्रश्न 21)
  - ➢ सिन्ध नदी का उद्गम स्थल मालवा पठार से है (प्रश्न (23)

उद्देश्य 5: चयनित प्राकृतिक सम्पदा के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में पाया गया कि पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन छात्र–छात्राएँ पूर्णतः जागरूक नहीं हैं। अतः जागरूकता संवर्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं।

- विद्यालयों में समय–समय पर पचनदा की पृष्ठभूमि पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाएँ।
- पचनदा के प्रति लोगों की जागरूकता संवर्धन के लिए संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएँ।
- पचनदा के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएँ।
- बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पदाओं को देश की राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया जाएँ।
- पचनदा की प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण किया जाएँ।

6.2 अध्ययन के सुझाव

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जालौन और आसपास के क्षेत्र में रहने वाले सभी विद्यार्थी पचनदा के प्रति पूरी तरह जागरूक नहीं हैं, उन्हें इस क्षेत्र के प्रति जानकारी देने की आवश्यकता है।

- पचनदा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
- पचनदा को विश्व पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जाए।
- विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर पचनदा के शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।
- पचनदा का सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(Bibliography)

"Every research stands on the foundation of authentic references. Knowledge grows when it is connected to prior knowledge. Bibliography is not the end of research, it is the beginning of new discoveries." – S. Radhakrishnan

प्रश्न 1: निम्नलिखित में से कौन–सी नदी पचनदा में शामिल नहीं है?

(अ) यमुना (ब) सिंध (स) सिन्धु (द) चंबल

प्रश्न 2: पचनदा उत्तर प्रदेश के किस जिले में स्थित है?

(अ) जालौन (ब) भिण्ड. (स) झाँसी. (द) इटावा

प्रश्न 3: उत्तर–प्रदेश में स्थित पचनदा को किस नाम से जाना जाता है?

(अ) तीर्थराज (ब) राजराज (स) संगमराज (द) संगमतीर्थ

प्रश्न 4: जालौन जिले के मुख्यालय उरई से पचनदा की दूरी कितने किमी है?

(अ) 65 km (ब) 50 km (स) 30 km (द) 80 km

प्रश्न 5: पचनदा में शामिल नदियाँ हैं?

(अ) क्वांरी (ब) पहुज (स) चंबल (द) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6: पचनदा क्षेत्र में भीम ने किसका वध किया था?

(अ) बकासुर (ब) दुर्योधन (स) नरकासुर (द) अघासुर

प्रश्न 7: पचनदा पर प्रत्येक वर्ष मेले का आयोजन कब होता है।

(अ) कार्तिक पूर्णिमा (ब) माघ पूर्णिमा (स) जन्माष्टमी (द) चौत्र पूर्णिमा

प्रश्न 8: बाबा साहब यात्री मुचकुंद महाराज का मंदिर कहाँ पर है?

(अ) पचनदा पर (ब) उरई में (स) इटावा में (द) कानपुर में

प्रश्न 9: बाबा साहब किसके समकालीन थे?

(अ) सूरदास (ब) तुलसीदास (स) कबीरदास (द) रैदास

प्रश्न 10: पचनदा किस ब्लॉक में स्थित है?

(अ) डकोर ब्लॉक (ब) रामपुरा ब्लॉक (स) मुस्तरा ब्लॉक (द) कोंच ब्लॉक

प्रश्न 11: पचनदा किस राज्य में स्थित है?

(अ) बिहार (ब) मध्यप्रदेश (स) उत्तर–प्रदेश (द) मणिपुर

प्रश्न 12: पचनदा पर भारत सरकार ने कितने करोड़ रुपए की लागत की परियोजना प्रस्तावित है?

(अ) 2100 करोड़ (ब) 3100 करोड़ (स) 1000 करोड़ (द) 2500 करोड़

प्रश्न 13: पंचनदा में किसने अज्ञातवास काटा था?

(अ) कौरवों ने (ब) पांडवों ने (स) राम जी ने (द) किसी ने नहीं

प्रश्न 14: बुन्देलखण्ड के जगम्मनपुर में कितनी नदियों का संगम बनता है?

(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

प्रश्न 15: पचनदा जालौन जिले के किस गाँव में स्थित है?

(अ) डकोर (ब) कोंच (स) जगम्मनपुर (द) एट

प्रश्न 16: पचनदा किस धर्म का धार्मिक स्थल है?

(अ) जैन (ब) इसाई (स) हिन्दू (द) बुद्ध

प्रश्न 17: यमुना, पहुज, चम्बल, क्वांरी और सिंध किस नाम से प्रसिद्ध है?

(अ) पचनदा (ब) सिद्ध संगम (स) संगमतीर्थ (द) रामतीर्थ

प्रश्न 18: जगम्मनपुर का किला कहाँ है?

(अ) बिहार (ब) मध्यप्रदेश (स) राजस्थान (द) उत्तर–प्रदेश

प्रश्न 19: तुलसीदास जी की खड़ाऊँ किस किले में रखी है?

(अ) जगम्मनपुर (ब) झाँसी (स) रामगढ़ (द) ग्वालियर

प्रश्न 20: यमुना नदी का उद्‌गम स्थल का नाम क्या है?

(अ) गंगोत्री (ब) यमुनोत्री (स) अमरकंटक (द) राकसताल

प्रश्न 21: जानापत पहाड़ी से किस नदी का उद्‌गम हुआ है?

(अ) चंबल (ब) यमुना (स) पहुज (द) क्वांरी

प्रश्न 22: पचनदा में स्थित महाकालेश्वर मंदिर की स्थापना कब हुई थी?

(अ) 800 B.C. (ब) 600 B.C. (स) 200 B.C. (द) 1100 B.C.

प्रश्न 23: पचनदा की नदियाँ अन्त में किस नदी में मिलती है?

(अ) गंगा (ब) बेतवा (स) केन (द) सोन

प्रश्न 24: पचनदा में शामिल नदियाँ है?

(अ) केन, पहुज, क्वांरी (ब) यमुना, बेतवा, केन

(स) पहुज, चंबल, यमुना (द) सरयू, चंबल, माही

प्रश्न 25: पचनदा पर किसका मंदिर है?

(अ) बाबा साहब (ब) तुलसीदास (स) बाबा ठाकुर (द) सूरदास

प्रश्न 26: पांडवों ने अज्ञातवास कहाँ काटा था?

(अ) परासन (ब) पंचमढ़ी (स) पचनदा (द) करनखेड़ा

प्रश्न 27: पहुज का उद्‌गम स्थल क्या है?

(अ) बबीना (ब) ऐरच (स) चिरगाँव (द) कोटरा

प्रश्न 28: क्वांरी का उद्‌गम स्थल कहाँ है?

(अ) बबीना (ब) भिण्ड (स) चिरगांव (द) कोटरा

प्रश्न 29: सिंध नदी का उद्‌गम स्थल कहाँ है?

(अ) मालवा (ब) भिण्ड (स) चिरगांव (द) कोटरा

प्रश्न 30: बाबा साहब का मंदिर कहाँ पर है?

(अ) जगम्मनपुर (ब) अकबरपुर–इटौरा (स) कालपी (द) एट

परिशिष्ट–V

पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली का अन्तिम प्रारूप

पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में पचनदा के प्रति जागरूकता के अध्ययन से संबंधित है।
इसमें जालौन जनपद स्थित पचनदा के प्रति जागरूकता संबंधित प्रश्न / कथन दिए गए हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगाएं। आपके द्वारा दी गई जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी। अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

* Indicates required question

1. Email *

2. **नाम** * — 0 points

3. **पिता का नाम** * — 0 points

4. **लिंग** *

   Mark only one oval.

   - ◯ छात्र
   - ◯ छात्रा

5. **कक्षा** * — 0 points

6. **महाविद्यालय** *

7. **कौन-सी नदी पचनदा में शामिल नहीं है** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) यमुना
- ( ) सिंध
- ( ) सिन्धु
- ( ) चंबल

8. **पचनदा किस जिले में स्थित है?** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) जालौन
- ( ) भिंड
- ( ) झाँसी
- ( ) इटावा

9. **उत्तर-प्रदेश में स्थित पचनदा को किस नाम से जाना जाता है?** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) महातीर्थराज
- ( ) राजराज
- ( ) संगमराज
- ( ) संगमतीर्थ

10. **पचनदा पर प्रत्येक वर्ष मेले का आयोजन कब होता है?** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) कार्तिक पूर्णिमा
- ( ) माघ पूर्णिमा
- ( ) जन्माष्टमी
- ( ) चैत्र पूर्णिमा

11. **उरई से पचनदा की दूरी कितने किलोमीटर है?** * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ 65 km
- ◯ 50 km
- ◯ 30 km
- ◯ 80 km

12. **बाबा साहब का मंदिर कहां पर है?** * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ जगम्मनपुर
- ◯ अकबरपुर इटौरा
- ◯ कालपी
- ◯ एट

13. **पचनदा क्षेत्र में भीम ने किसका वध किया था?** * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ बकासुर
- ◯ मायासुर
- ◯ अघासुर
- ◯ नरकासुर

14. **बाबा साहब किसके समकालीन थे?** * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ सूरदास
- ◯ तुलसीदास
- ◯ कबीरदास
- ◯ रैदास

15. **पचंदा किस राज्य में स्थित है?** * 1 point

Mark only one oval.

- बिहार
- मध्य प्रदेश
- उत्तर प्रदेश
- मणिपुर

16. **पचनदा किस ब्लॉक में स्थित है?** * 1 point

Mark only one oval.

- डकोर
- रामपुरा
- मुस्तरा
- कोंच

17. **जगम्मनपुर में कितनी नदियों का संगम है?** * 1 point

Mark only one oval.

- 2
- 3
- 5
- 4

18. **पचनदा जालौन जिले के किस गांव में स्थित है?** * 1 point

Mark only one oval.

- जगम्मनपुर
- डकोर
- कोंच
- एट

19. **जगम्मनपुर का किला कहां है?** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) बिहार
- ( ) राजस्थान
- ( ) मध्य प्रदेश
- ( ) उत्तर प्रदेश

20. **तुलसीदास जी की खड़ाऊ किस किले में रखी हैं?** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) जगम्मनपुर
- ( ) झांसी
- ( ) रामगढ़
- ( ) ग्वालियर

21. **पचनदा में स्थित महाकालेश्वर मंदिर की स्थापना कब हुई थी?** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) 800 B.C.
- ( ) 600 B.C.
- ( ) 200 B.C.
- ( ) 1100 B.C.

22. **जानापाव पहाड़ी से किस नदी का उद्गम हुआ है?** * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) चंबल
- ( ) यमुना
- ( ) पहुज
- ( ) कुंवारी

23. **पचनदा की नदियां अंत में किस नदी से मिलती हैं?** * 1 point

Mark only one oval.

- गंगा
- केन
- बेतवा
- सोन

24. **पचनदा में शामिल नदियां हैं?** * 1 point

Mark only one oval.

- केन, पहुज, कुंवारी
- यमुना, बेतवा, केन
- पहुज, चंबल, यमुना
- सरयू, चंबल, माही

25. **पचनदा पर किसका मंदिर है?** * 1 point

Mark only one oval.

- बाबा ठाकुर
- बाबा साहब
- तुलसीदास
- बाला साहब

26. **पांडवों ने कहां अज्ञातवास काटा था?** * 1 point

Mark only one oval.

- पचनदा
- सूरसेन
- परासन
- करनखेरा

27. 'पहुज' नदी का उद्गम स्थल कहाँ है? * 1 point

Mark only one oval.

- बबीना
- ऐरच
- चिरगाँव
- कोटरा

28. 'कुँवारी' नदी का उद्गम स्थल कहाँ है? * 1 point

Mark only one oval.

- भिंड
- ऐरच
- चिरगाँव
- कोटरा

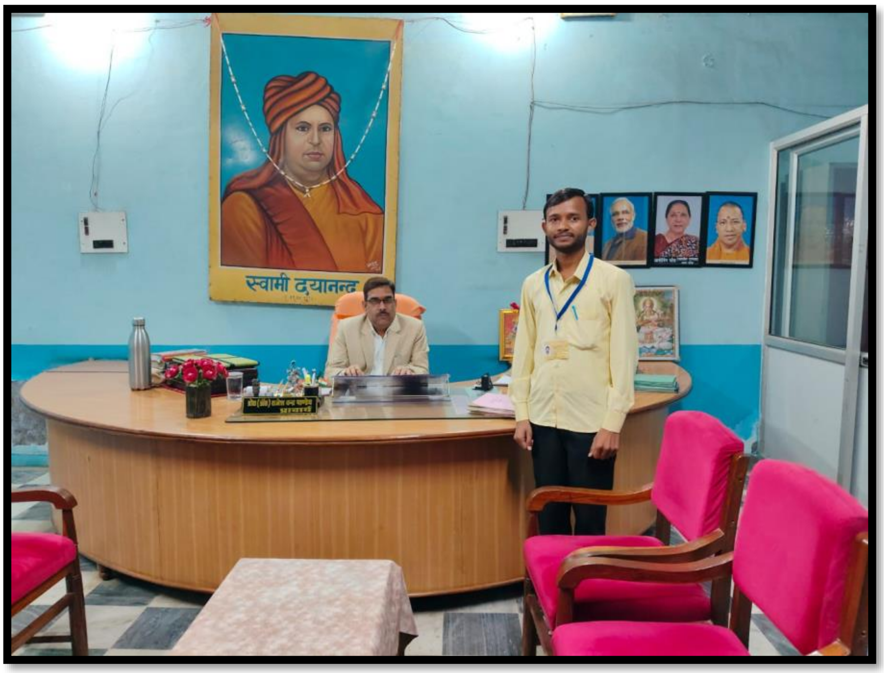
29. 'सिंध' नदी का उद्गम स्थल किस पठार से है? * 1 point

Mark only one oval.

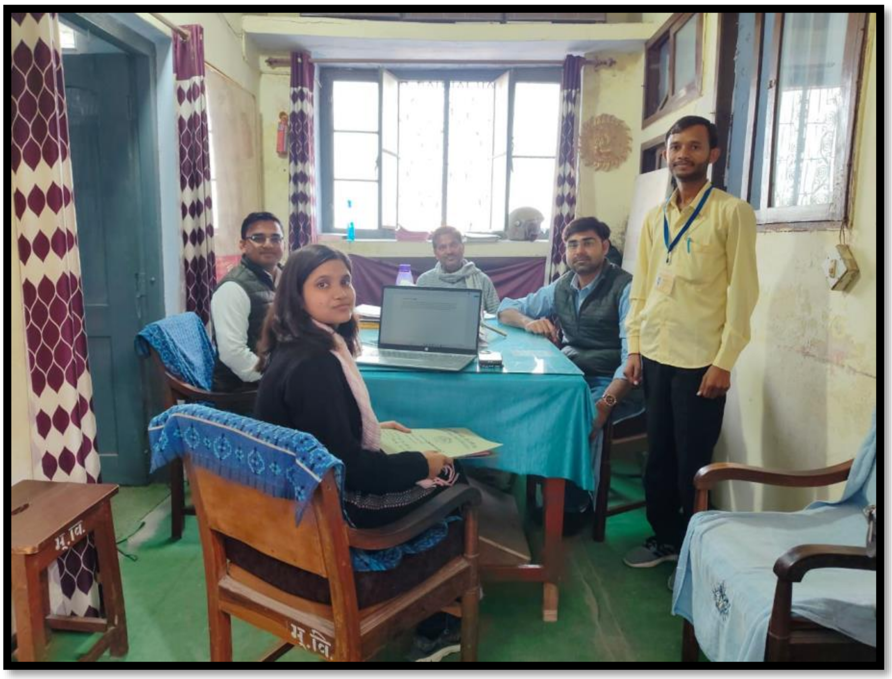
- मालवा
- मेवाड़
- हजारीबाग
- बुंदेलखंड

परिशिष्ट–VI

परीक्षण प्रशासन चित्रावली



प्राचार्य, दयानन्द वैदिक कॉलेज (उरई)



भूगोल विभागाध्यक्ष और अन्य प्रोफेसर, दयानन्द वैदिक कॉलेज (उरई)

परिशिष्ट–VI (जारी)



प्रश्नावली भरते हुए विद्यार्थी



प्रश्नावली भरते हुए विद्यार्थी

परिशिष्ट–VII

जागरूकता प्रश्नावली उत्तरमाला

प्रश्न सं.	प्रश्न	उत्तर
1.	कौन–सी नदी पचनदा में शामिल नहीं है?	सिन्धु
2.	पचनदा किस जिले में स्थित है?	जालौन
3.	उत्तर–प्रदेश में स्थित पचनदा को किस नाम से जाना जाता है?	महातीर्थराज
4.	पचनदा पर प्रत्येक वर्ष मेले का आयोजन कब होता है?	कार्तिक पूर्णिमा
5.	उरई से पचनदा की दूरी कितने किलोमीटर है?	65km
6.	बाबा साहब का मंदिर कहाँ पर है?	जगम्मनपुर
7.	पचनदा क्षेत्र में भीम ने किसका वध किया था?	बकासुर
8.	बाबा साहब किसके समकालीन थे?	तुलसीदास
9.	पचनदा किस राज्य में स्थित है?	उत्तर–प्रदेश
10.	पचनदा किस ब्लॉक में स्थित है?	श्रामपुरा
11.	जगम्मनपुर में कितनी नदियों का संगम है?	5
12.	पचनदा जालौन जिले के किस गाँव में स्थित है?	जगम्मनपुर
13.	जगम्मनपुर का किला कहाँ है	उत्तर–प्रदेश
14.	तुलसीदास जी की खड़ाऊँ किस किले में रखी हैं?	जगम्मनपुर
15.	पचनदा में स्थित महाकालेश्वर मंदिर की स्थापना कब हुई थी?	800B.C.
16.	जानापाव पहाड़ी से किस नदी का उद्गम हुआ है?	चंबल
17.	पचनदा की नदियाँ अन्त में किस नदी से मिलती हैं?	गंगा
18.	पचनदा में शामिल नदियाँ हैं?	पहुज, चंबल, यमुना
19.	पचनदा पर किसका मंदिर है?	बाबा साहब
20.	पांडवों ने कहां अज्ञातवास काटा था?	पचनदा
21.	'पहुज' नदी का उद्गम स्थल कहाँ है?	बबीना
22.	'कुँवारी' नदी का उद्गम स्थल कहाँ है?	भिंड
23.	'सिंध' नदी का उद्गम स्थल किस पठार से है?	मालवा

परिशिष्ट–VIII

जीवन वृत्त

व्यक्तिगत सूचना



नाम : दिनेश कुमार

माता का नाम : श्रीमती गुड्डो देवी

पिता का नाम : श्री उदय सिंह

जन्म तिथि : 02 जनवरी 1996

पता : ग्राम व पोस्ट पहाड़ी–भिटारी, तहसील मौदहा, जिला–हमीरपुर (उ.प्र.)

पिनकोड : 210506

मोबाइल नम्बर : 7398624705

ई–मेल : rajd646@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र0सं0	परीक्षा का नाम	बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम	वर्ष	प्राप्तांक	श्रेणी	प्रतिशत
1	हाईस्कूल	यू0पी0 बोर्ड, इलाहाबाद	2010	260	तृतीय	43.33
2	इण्टरमीडिएट	यू0पी0 बोर्ड, इलाहाबाद	2012	342	प्रथम	68.4
3	स्नातक	बुन्देलखण्ड वि0वि0, झाँसी	2015	667	प्रथम	66.7
4	परास्नातक (भूगोल)	बुन्देलखण्ड वि0वि0, झाँसी	2017	608	प्रथम	60.8
5	शिक्षा स्नातक	बुन्देलखण्ड वि0वि0, झाँसी	2021	907	प्रथम	75.58

घोषणा– मैं एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त सभी जानकारी मेरे संज्ञानानुसार सर्वोत्तम रूप से सत्य है।

दिनांक– 21.11.2025

हस्ताक्षर

Dinesh Kumar

स्थान– अतर्रा (बाँदा)

(दिनेश कुमार)

पचनदा के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन



"जहाँ चंबल की गहराई और यमुना की विशालता एक हो जाती है, वह स्थान पचनदा है।"

ISBN: 978-93-5679-245-6

9 789356 792456